

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 12 अंक 2

अगस्त, 2025

Bi-annual

Bi-lingual

A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.



अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2700 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1100 (5 years)	Rs. 3000 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the '**Sanskritik Pravah**' **Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

आङ्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com

: ramsjaipur@gmail.com

website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)
094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Pinkcity Book Manufactures, Kukas, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 12 अंक 2

अगस्त 2025

अर्द्धवार्षिक

द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए समर्पित एक बहु-विषयात्मक
सहकर्मी समीक्षित (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad

Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya
Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Prof. Alpna Kateja

Vice Chancellor,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri

Ex Vice Chancellor, Central University of
Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Prof. M. L. Chhipa

Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma

Ex Vice Chancellor, Gautam Buddha University,
Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma

Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh

Ex Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University,
Sikar (Raj.)

Prof. Vibha Upadhyay

Ex Head, Department of History and
Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Dr. Shreerang Godbole

Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharashtra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma

Ex Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal

Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta

Secretary,
Jan Kalyan Sansthan, Jaipur
E-mail : gsgupta1960@gmail.com
Mobile : 09460070031

Associate Editor

Dr. Indrajeet Bhattacharya

Founder-Owner & Independent Researcher,
Echos of India, Jaipur
E-mail : ibhattacharya@sanskritikpravah.com
Mobile : 09571806910

Editorial Board

Dr. Sunil Asopa

Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Suraj Rao

Deputy Registrar
MDS University, Ajmer (Raj.)
E-mail : suraj1973@gmail.com
Mobile : 94602 46641

Dr. Pramila Dubey

Former Dean, faculty of Education
(University of Rajasthan), Principal,
SSG Pareek P.G. College of Education, Banipark, Jaipur
Mobile : 09413156597

Dr. Kailash Chand Gurjar

Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile : 09929089995

Dr. Jayanti Lal Khandelwal

Assistant Professor,
Apex University, Jaipur (Raj.)
Email : jl1974khandelwal@gmail.com
Mobile : 9314640220

About Contributors of this issue

1. डॉ. सूरज राव

विगत 20 वर्षों से भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास पर शोध कार्य। लगभग 132 शोध पत्र जिसमें 60 शोध पत्र भारतीय और विदेशी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित। 10 पुस्तकें प्रकाशित। सहायक प्राध्यापक इतिहास, मेवाड़ विश्वविद्यालय।

सम्प्रति – उपकुलसचिव, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

2. डॉ. कृष्ण कुमार कुमावत

आपने संस्कृत में स्नातकोत्तर किया। आपका शोध कार्य 'साहित्यदर्पणस्य लोचनटीकायाः समीक्षण' पर है आपकी तीन पुस्तकें एवं 15 शोधपत्र प्रकाशित हैं वर्तमान में सहा. आचार्य एवं राज्य समन्वयक, युवा कौशल विकास प्रकोष्ठ, आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर।

3. डॉ. निकिता गर्ग

एम. काम, एम. एड., एम.ए. (मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र) नेट परीक्षा उत्तीर्ण है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 12 से अधिक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित। वर्तमान में एस एस जी पारीक शिक्षा महाविद्यालय में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत है।

4. इन्दुशेखर तत्पुरुष

भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान साहित्य अकादमी। कवि, स्तंभलेखक एवं संपादक- 'साहित्य परिक्रमा'। 'हिंदुत्व : एक विमर्श' सहित कुल पांच पुस्तक प्रकाशित। पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक जागरण, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका आदि में आलेख प्रकाशित।

5. डॉ. दीपिका विजयवर्गीय

शिक्षण अनुभव-26 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पीएच.डी., नेट, शोध कार्य-धर्मवीर भारती का काव्य। शोध निर्देशन-12 शोधार्थी उपाधि प्राप्त, 6 शोधार्थी शोध कर रहे हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभागिता - 80, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभागिता-15, राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में शोधपत्र प्रकाशन 35, वाचन 25, पुस्तक प्रकाशन -09, पुरस्कार / सम्मान-14, विशेष (व्याख्यान-अनेक संस्थाओं में संयोजन- एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी/संचालन- 20 से अधिक कार्यक्रमों का/सदस्यता -04 संगठनों में आजीवन, 03 विश्वविद्यालयों में BOS की सदस्य। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्रॉजेक्ट आदि। **सम्प्रति** - सह आचार्य, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

6. डॉ. इंद्रजीत भट्टाचार्य

संस्थापक-अधिकारी व स्वतंत्र शोधकर्ता, इकोस ऑफ इंडिया, जयपुर

सम्प्रति - डॉ. इंद्रजीत भट्टाचार्य एक संग्रहालय और संरक्षण विज्ञानी हैं। 'वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी : संग्रहालयों में 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)' की प्रासंगिकता और भूमिका' विषय पर पीएच.डी. प्राप्त करने के बाद, उनका शोध संग्रहालयों में IoT अनुप्रयोगों, विरासत स्थलों में स्वचालन, कलाकृतियों के संरक्षण, स्मारकीय वास्तुकला और पुरातत्व एवं पुरालेखशास्त्र के माध्यम से प्राचीन भारतीय इतिहास की पुनर्व्याख्या पर केंद्रित है। 20 प्रकाशित शोध पत्रों और 17 प्रस्तुतियों के साथ, उन्होंने महत्वपूर्ण शैक्षणिक

योगदान दिया है। वे ब्राह्मी (पांडुलिपियों, मूर्तियों और सिक्कों पर), शारदा, सिंहल, जैन-नागरी, तिब्बती, नेवारी, ग्रंथ और वट्टेद्युथु जैसी ऐतिहासिक लिपियों में भाषाई विशेषज्ञता प्रदर्शित करते हैं। संग्रहालय विज्ञान एवं संरक्षण में स्नातकोत्तर और यूजीसी-नेट योग्यता प्राप्त पूर्व छात्र होने के साथ-साथ, उनके पास विज्ञान की डिग्री, कंप्यूटर अनुप्रयोगों में स्नातकोत्तर और माइक्रोसॉफ्ट प्रमाणन (2005) भी है। आईटी उद्योग में उनका 29 वर्षों का शानदार करियर रहा है और उन्होंने 25 तकनीकी परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। प्रमुख संरक्षण परियोजनाओं में 'जयपुर पुराने शहर में पुराने भित्ति चित्रों वाले स्मारकों का शब्दकोश' पर INTACH के साथ सहयोग और राजस्थान विश्वविद्यालय के SGGCNISS के साथ 11 महीने की एक परियोजना, जिसका शीर्षक 'जयपुर और अजमेर जिलों के गुरुद्वारों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण' है, शामिल है। उन्होंने सवाई मान सिंह-द्वितीय संग्रहालय ट्रस्ट की ओर से राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में एक परियोजना में भाषा विशेषज्ञ के रूप में भी काम किया। वर्तमान में, वे एमिटी विश्वविद्यालय, राजस्थान के एमिटी स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स की उद्योग सलाहकार परिषद से उद्योग विशेषज्ञ के रूप में और सांस्कृतिक प्रवाह पत्रिका से एसोसिएट एडिटर के रूप में संबद्ध हैं।

7. डॉ. सुजीत सरोच के बारे में...

डॉ. सुजीत सरोच एक सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री, जनसांख्यिकीविद, राजनीतिशास्त्री तथा प्रोफेशनल सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने पिछले लगभग तीन दशकों के दौरान हिमाचल प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत सरकारी महाविद्यालयों में समाजशास्त्र के आचार्य के रूप में कार्य किया तथा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचार्य के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। उन्होंने भारत तथा कई देशों में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में एक सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये तथा तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता की, विभिन्न विषयों पर दो दर्जन पुस्तकें लिखीं तथा अठारह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का सफल आयोजन किया जिनमें विश्व के सभी 6 महाद्वीपों के उच्च स्तरीय प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत रूप से अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया। Karate में 5 डिग्री ब्लैक बेल्ट डॉ. सरोच अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता व अन्तर्राष्ट्रीय जज हैं जिन्हें विश्व की तीसरी सर्वोच्च उपाधी 'रेंशी' से भी नवाजा गया है।

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

	पृष्ठ संख्या
संपादकीय ...	8
1. मध्य एशिया में पौराणिक चन्द्रवंशियों का सांस्कृतिक विस्तार (वंशावलियों के विशेष संदर्भ में)	9
- डॉ. सूरज राव	
2. भारतीय संस्कृति में मूल्य आधारित जीवन की संकल्पना	19
- डॉ. कृष्ण कुमार कुमावत	
3. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सातत्य	26
- डॉ. निकिता गर्ग	
4. वैष्णव भक्ति में पर्यावरण रक्षा के प्रणेता : गुरु जाम्भोजी	35
- इन्दुशेखर तत्पुरुष	
5. स्व का विकास षोडश संस्कार	41
- डॉ. दीपिका विजयवर्गीय	
6. Pravasi Bengali Durga Puja : Rituals, Culture & Social aspects	49
- Dr. Indrajeet Bhattacharya	
7. Meditation in Indian Society : An In-depth Analysis	84
- Sujit Saroch	
● Guidelines for authors	100
● Review & Publication Policy, Ethics Policy	103

संपादकीय

संस्कृति का संबंध हमारे कर्म और भाव से है। जिस कर्म और भाव से हमारे संस्कार सुंदर बनें, जिससे हमारी 'कृति' अच्छी बने वही है संस्कृति। हमारी जीवन शैली, मान्यताओं, जीवन मूल्यों और प्रतीकों का संस्कृति से गहरा संबंध है। संस्कृति हमारा सुसंस्कृत व्यवहार है।

भारत की संस्कृति यज्ञमयी और त्यागमयी मानी जाती है। 'इदं न मम्' अर्थात् यह मेरा नहीं है, 'सर्वभूतहितेरेता' यानी सभी प्राणियों के हित में लगे रहना, आदि हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' अर्थात् सत्य एक ही है, विद्वानजन इसे विभिन्न प्रकार से व्यक्त करते हैं। सब पंथों-संप्रदायों-मतों का आदर करना, अपना कर्तव्य पालन करना, परिवार को समाज की सबसे छोटी इकाई मानना, परिवार में संस्कारों की परंपरा, विविधता में एकता के दर्शन, प्रकृति का शोषण नहीं, प्रकृति के साथ समन्वय, जैसी विशेषताओं से युक्त मानी जाती है भारतीय संस्कृति। भारतीय संस्कृति यथार्थ में केवल भारत की ही संस्कृति नहीं है, वह तो मानव मात्र की संस्कृति है। इस संस्कृति में जो समन्वयमूलक दृष्टि और विविधता में एकता की जो क्षमता है, वह अन्यत्र नहीं मिलती।

सांस्कृतिक प्रवाह के इस अंक में जहाँ डॉ.कृष्ण कुमार कुमावत ने भारतीय संस्कृति में मूल्य आधारित जीवन की संकल्पना को रेखांकित करने का प्रयास किया है, वहीं डॉ. निकिता गर्ग ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के सातत्य पर चर्चा की है। भारतीय संस्कृति में संस्कार पक्ष समझने की दृष्टि से डॉ.दीपिका विजयवर्गीय ने षोडश संस्कारों की छानबीन की है। क्या इन षोडस संस्कारों से बालक में 'स्व' का विकास होता है? - इस पक्ष की भी विवेचना की गई है।

बड़ी संख्या में भारत के विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोग भारत के दूसरे भागों में जाकर बस गए हैं। प्रवासी बंगालियों की दुर्गा पूजा और इसके सांस्कृतिक-सामाजिक पक्ष की विवेचना डॉ.इन्द्रजीत भट्टाचार्य के आलेख में है। भारतीय समाज में 'ध्यान' पक्ष की गहराई से पड़ताल करता समाजशास्त्री डॉ. सुजीत सरोज का शोधपत्र महत्वपूर्ण है।

आशा है पाठकगण अंक में बारे में अपनी राय से अवगत कराएंगे। इति शुभम्।

- रामस्वरूप अग्रवाल

Guideline For Authors

1. Articles should be submitted through e-mail us at editor.sprj@gmail.com or ramsjaipur@gmail.com. A hard copy of the same must be sent by post or by hand.
2. The manuscript should be typed in Page Maker or M.S. Word on A4 size paper. For Hindi, use 14 point font size for text, 25 point size for main heading and 15 point font size for sub headings. For English, use 12 point font size for text, 24 point size for main heading and 13 point font size for sub headings. For English, use Times New Roman Font and for Hindi, Devlys 010 or Chanakya Font.
3. All references should be given at the end of the article.
4. For the Citation and References, Guidelines specified in the Publication Manual of the American Psychological Association (6th edition, 2009) must be followed.
5. All acknowledgements if any, should be given at the end of the article and before the references.
6. Care should be taken to avoid spelling error & grammatical mistakes.
7. If 'Slokas' from Sanskrit text are referred in any article, please give their Hindi translation also.
8. The article / research paper shall be published subject to recommendation of referees.
9. Author should furnish their short introduction, mailing address, e-mail and phone / mobile numbers.

Detailed Submission Guideline

1. Manuscript:

The manuscript should be structured as follows:

- Cover page, showing title of the paper, name of author, author's affiliation and institutional address with pin code, email id and a 200–250 word abstract.
- Authors' names and references should not be used in the text in order to keep authors' anonymity (e.g., 'as the author has written elsewhere' should be avoided). In case there are two or more authors, then corresponding author's name and address details must be clearly specified on the first page itself.
- The contributors should also provide 4–5 keywords for online search.
- Text should start on a new page, and must not contain the names of authors.
- References should come at the end of the manuscript.
- Tables and figures should be provided in editable format and should be referred to in the text by number separately (e.g., Table 1) not by placement (e.g., see Table below). They should each be submitted on a separate page following the article, numbered and arranged as per their references in the text. They will be inserted in the final text as indicated by the author. Source citations with tables and figures are required irrespective of whether or not they require permissions.
- Figures, including maps, graphs and drawings, should not be larger than page size. They should be numbered and arranged as per their references in the text. All photographs and scanned images should have a resolution of minimum 300 dpi and 1500 pixels and their format should be TIFF or JPEG. Permissions to reprint should be obtained for copyright protected photographs/images. Even for photographs/images available in the public domain, it should be clearly ascertained whether or not their reproduction requires permission for purposes of publishing. All photographs/scanned images should be provided separately in a folder along with the main article.
- Mathematical formulae, methodological details etc. should be given separately as an appendix, unless their mention in the main body of the text becomes essential.

2. Language

- a. The language and spellings used should be British (U.K.), with 's' variant, e.g., globalisation instead of globalization, labour instead of labor. For non-English and uncommon words and phrases, use italics only for the first time. Meaning of non-English words should be given in parenthesis just after the word when it is used for the first time.
- b. Articles should use non-sexist and non-racist language.
- c. Spell out numbers from one to ninety nine, 100 and above to remain in figures. However, for exact measurement (e.g., *China's GDP growth rate 9.8 per cent*) use numbers. Very large round numbers, especially sums of money, may be expressed by a mixture of numerals and spelled-out numbers (*India's population 1.2 billion*).
- d. Single quotes should be used throughout. Double quote marks are to be used within single quotes. Spellings of words in quotations should not be changed. Quotations of 45 words or more should be separated from the text.
- e. Notes should be numbered serially and presented at the end of the article. Notes must contain more than a mere reference.
- f. Use 'per cent' instead of % in the text. In tables, graphs etc, % can be used. Use '20th century', '1990s'.
- g. Only the first word of title and subtitle should start with capitals. Although proper names are capitalised, many words derived from or associated with proper names, as well as the names of significant offices are lowercased. While the names of ethnic, religious and national groups are capitalised (*the Muslims, the Gurkhas, the Germans*), designations based loosely on colour (*black people*) and terms denoting socio-economic classes or groups (*the middle class, the dalits, the adivasis, the african-american*) are lowercased. All caste, tribe and community names (*the Santhals, the Jatavs*) are to be capitalised but generic terms (*the kayasths*) are to be lower cased. Civil, military, religious, and professional titles (*the president*) and institutions (*the parliament, the united nations*) are to be put in lower case, but names of organisations (*the Labour Party, the Students Federation of India*) are to be capitalised. The names of political tendencies (*the marxists, the socialists*) should remain in lower case.
- h. Abbreviations are spelled out at first occurrence. Very common ones (*US, GDP, BBC*) need not be spelled out. Other commonly used abbreviations (*am, pm, cm, kg, ha*) can be used in lower case, without spaces.

3. Citations and References

Guidelines specified in the *Publication Manual of the American Psychological Association* (6th edition, 2009) must be followed.

References:

- A consolidated listing of all books, articles, essays, theses and documents referred to (including any referred to in the tables, graphs and maps) should be provided at the end of the article.
- Arrangement of references: Reference list entries should be alphabetized by the last name of the first author of each work. In each reference, authors' names are inverted (last name first) for all authors (first, second or subsequent ones); give the last name and initials for all authors of a particular work unless the work has more than six authors.
- If the work has more than six authors, list the first six authors and then use et al. after the sixth author's name.
- Chronological listing: If more than one work by the same author(s) is cited, they should be listed in order by the year of publication, starting with the earliest.
- Sentence case: In references, sentence case (only the first word and any proper noun are capitalized – e.g., 'The software industry in India') is to be followed for the titles of papers, books, articles, etc.

- Title case: In references, Journal titles are put in title case (first letter of all words except articles and conjunctions are capitalized – e.g., Journal of Business Ethics).
- Italicize: Book and Journal titles are to be italicized.

Some examples are given below:

In-text citations:

- One work by one author: (Kessler, 2003, p. 50) or 'Kessler (2003) found that among the epidemiological samples...'
- One work by two authors: (Joreskog & Sorborn, 2007, pp. 50–66) or Joreskog and Sorborn (2007) found that..
- One work by three or more authors: (Basu, Banerji & Chatterjee, 2007) [first instance]; Basu et al. (2007) [Second instance onwards].
- Groups or organizations or universities: (University of Rajasthan, 2007) or University of Rajasthan (2007).
- Authors with same surname: Include the initials in all the in-text citations even if the year of publication differs, e.g., (I. Light, 2006; M.A. Light, 2008)
- Works with no identified author or anonymous author: Cite the first few words of the reference entry (title) and then the year, e.g., ('Study finds', 2007); (Anonymous, 1998).
- If abbreviations are provided, then the style to be followed is: (National Institute of Mental Health [NIMH], 2003) in the first citation and (NIMH, 2003) in subsequent citations.
- Two or more works by same author: (Gogel, 1990, 2006, in press)
- Two or more works with different authors: (Gogel, 1996; Miller, 1999)
- Secondary sources: Allport's diary (as cited in Nicholson, 2003).
- Films: (Name of the Director, Year of release)

References:

Books: Patnaik, U. (2007). *The republic of hunger*. New Delhi: Three Essays Collective.

Edited Books: Amanor, K. S., & Moyo, S. (Eds.) (2008). *Land and sustainable development in Africa*. London/New York: Zed Books.

Translated books: Amin, S. (1976). *Unequal development* (trans. B. Pearce). London and New York: Monthly Review Press.

Book chapters: Chachra, S. (2011). *The national question in India*. In S. Moyo and P. Yeros (Eds), *Reclaiming the nation* (pp. 67–78). London and New York: Pluto Press.

Journal articles: Foster, J. B. (2010). The financialization of accumulation. *Monthly Review*, 62(5), 1-17.

Newsletter article, no author: Six sites meet for comprehensive anti-gang initiative conference. (2006, November / December). *OOJDP News @ a Glance*. Retrieved from <http://www.ncrjs.gov/html>

[Please do not place a period at the end of an online reference.]

Newspaper article: Schwartz, J. (1993, September 30). Obesity affects economic, social status. *The Washington Post*, pp. A1, A4.

In-press article: Briscoe, R. (in press). Egocentric spatial representation in action and perception. *Philosophy and Phenomenological Research*. Retrieved from <http://cogprints.org/5780/1/ECSRAP.F07.pdf>

Non-English reference book, title translated into English: Real Academia Espanola. (2001). *Diccionario de la lengua espanola* [Dictionary of the Spanish Language] (22nd ed.). Madrid, Spain: Author.

Special issue or section in a journal: Haney, C., & Wiener, R. L. (Eds.) (2004). Capital punishment in the United States [Special Issue]. *Psychology, Public Policy, and Law*, 10(4), 1-17.

Review & Publication Policy

1. There is a board of eminent scholars of various discipline to review the quality of research articles. Articles received for publication are sent to these reviewers. They go through and evaluate the articles. All traces of author's identity are removed from the article before it is sent to the reviewer.
2. Only original and unpublished articles are accepted for publication fulfilling norms of research methodology.
3. We do not accept any charges for submission and publication of articles.
4. It is a multidisciplinary journal dedicated to Socio-Cultural Harmony. Thus, articles for publication are preferred on any subject mentioned in the Thrust Area (See at page no. 102).
5. The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and do not necessarily represent the views of the editor. The 'Sanskritik Pravah' accepts no responsibility for them.
6. The submitting author shall be informed about the selection of the article by e-mail only. Articles not accepted for publication will not be returned to the authors.
7. The article must be accompanied with an understanding that the same has not been published elsewhere and is not under review by another publication.
8. The article shall be published subject to recommendation of referees.

Ethics Policy

1. Fabrication or falsification of data with the intent to mislead is unethical as is the theft & copy of contents from others.
2. Research papers are accepted on the understanding that their contents are original and unpublished and not submitted for publication anywhere else. A certificate to this effect should accompany with the article.
3. Reproducing text from other papers without properly crediting the source is not acceptable. Authors should acknowledge the work of others used in their research and cite their publications.
4. Articles should not contain any material that is unlawful or defamatory.
5. Articles should use non-sexist and non-racist language.
6. All those who have made a significant contribution should be cited as authors. Other individuals who have contributed to the work should be acknowledged.
7. The submitting author is responsible for ensuring that the article's publication has been approved by all the other co-authors.
8. The submitting author should ensure :
 - That the work has not been published before (except in the form of an abstract or as part of a published lecture, review or thesis).
 - That the work is not under consideration elsewhere.
 - That the copyright has not been breached in seeking its publications.
 - That the publication has been approved by responsible authorities at the institute or organisation where the work has been carried out.

संस्थान के प्रमुख प्रकाशन

अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य -

1. **आत्मसातीकरण का पुण्य प्रवाह**
लेखक - डॉ. कृष्ण गोपाल
पृष्ठ संख्या 24, मूल्य रु. 10/-
2. **इस्लाम का अंतर-दर्शन**
लेखक - डॉ. श्रीरंग अरविन्द गोडबोले
पृष्ठ संख्या 256, मूल्य रु. 200/-
3. **धर्म प्रचार का अधिकार : भ्रातियों एवं निवारण**
- संविधान सभा में हुई बहस के संदर्भ में
लेखक - रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 32, मूल्य रु. 20/-
4. **अतीत से साक्षात्कार**
सम्पादक - रामप्रसाद
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 100/-
5. **मतांतरण : चुनौतियाँ एवं विधिक समाधान**
लेखक - रामप्रसाद एवं रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 84, मूल्य रु. 40/-
6. **ईसाईयत सिद्धान्त एवं स्वरूप**
लेखक - डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 304, मूल्य रु. 300/-
7. **इतिहास में गुर्जर समाज-पुनरावलोकन (स्मारिका)**
सम्पादक - डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
एवं डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 100/-
8. **शुद्धि आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास**
लेखक - डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 40/-
9. **धर्मजागरण समन्वय के पुरोधाय**
मुकुन्द आत्माराम पणशीकर
सम्पादक - डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 280, मूल्य रु. 200/-
10. **साधु स्वाध्याय संगम**
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 75/-

सहयोगी प्रकाशन

1. **अ.भा. वंशलेखक दिग्दर्शिका**
सम्पादक - डॉ. सुनील आसोपा, डॉ. सुखदेव राव, डॉ. सूरज राव तथा डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 446, मूल्य रु. 200/-
2. **संविधान में धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार, सिद्धांत, व्यवहार एवं चुनौतियाँ**
लेखक - डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 200/-
3. **सांस्कृतिक प्रवाह (जनांकिकी विशेषांक)**
मुख्य सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान
पृष्ठ संख्या 192, मूल्य रु. 200/-
4. **वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलियाँ**
सम्पादक - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
एवं डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 150/-

उपरोक्त पुस्तकों को क्रय करने हेतु सम्पर्क करें-

प्रकाशन विभाग

अ.भा.संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

सम्पर्क : 0141-2973369 (का.) 9414312288 e-mail : editor.sprj@gmail.com

‘सांस्कृतिक-प्रवाह’ शोध पत्रिका में प्रकाशन हेतु निम्नलिखित विषयों एवं इनके अनुसांगिक विषयों पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं। (उपबिन्दु मुख्य विषयों को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणार्थ ही हैं।)

1. सामाजिक समरसता

- सामाजिक समरसता की अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा।
- सामाजिक समरसता को प्रभावित करने वाले कारक, सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत/महापुरुष/समाज सुधारक, सामाजिक समरसता के लिए वर्तमान में कार्यरत संस्थाएँ
- समाज को जोड़ने वाले तत्व (यथा मातृभूमि के प्रति समान भाव, सांस्कृतिक एकता के तत्व, समान पूर्वज व समान विरासत, समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर स्नेह व्यवहार इत्यादि)
- धर्मग्रंथों/संतों की वाणी में सामाजिक समरसता
- सामाजिक समरसता एवं मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
- जातिवादी राजनीति एवं सामाजिक समरसता
- सामाजिक समरसता को बढ़ाने वाले त्यौहार, मेले एवं तीर्थ स्थल

2. राष्ट्रीय एकता

- अर्थ, अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
- प्राचीन भारतीय वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता के तत्व
- राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत/संत/महापुरुष
- राष्ट्रीय एकता बनाम मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
- धर्म ग्रन्थ/ संत वाणी में राष्ट्रीय एकता के तत्व
- देश विभाजन के कारक एवं वर्तमान स्थिति
- संविधान के प्रावधान व न्यायिक निर्णय

3. सांस्कृतिक चेतना

- अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
- विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन
- सांस्कृतिक चेतना में विभिन्न संत/महापुरुषों का योगदान
- विभिन्न तीर्थ स्थल, त्यौहार, मेले, लोक देवताओं की भूमिका

4. विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों का उद्गम, इतिहास, विविध शाखाएँ, समानताएँ

- जातियों के लोक देवता, वीर पुरुष, तीर्थ स्थल, वंश लेखक
- मतांतरण (Conversion) का प्रभाव

5. लोकदेवता व एकाधिक पंथों/जातियों में उनकी मान्यता

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक अवधारणा

- विश्व तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य
- मानवाधिकार/सामाजिक समरसता के सन्दर्भ में अल्पसंख्यक अवधारणा व अधिकार
- बहुपंथिक एवं जाति आधारित समाज में अल्पसंख्यक अवधारणा का औचित्य
- अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक सन्दर्भ में जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन व प्रभाव
- जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन एवं पूर्वोत्तर भारत
- पंथनिरपेक्षता बनाम अल्पसंख्यकवाद
- संबंधित संवैधानिक व विधिक प्रावधान तथा न्यायिक निर्णय
- समानता का अधिकार बनाम अल्पसंख्यक प्रावधान

7. धार्मिक सहिष्णुता/सर्वधर्म समभाव

- हिन्दू/ईसाई/इस्लाम का एक दूसरे के प्रति व अन्य पंथों के प्रति दृष्टिकोण

- स्त्री, विवाह, परिवार नियोजन, पर्यावरण आदि पर विभिन्न मजहबों की अवधारणा/विचार
 - विभिन्न पंथ/मजहबों के समान रीति-रिवाज, व्यवहार
 - चर्च का अंतर-पंथ संवाद (Interfaith Dialogue)
- 8. पंथनिरपेक्षता (Secularism)**
- आशय, अवधारणा
 - उद्गम, इतिहास, भारत एवं विश्व परिप्रेक्ष्य
 - पंथनिरपेक्षता बनाम सर्वधर्म समभाव
 - पंथनिरपेक्षता के तत्व, संवैधानिक व वैधानिक स्थिति, न्यायिक निर्णय
 - भारतीय समाज व पंथनिरपेक्षता
- 9. जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) असंतुलन (सन्दर्भ-विभिन्न मजहब/अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक समाज)**
- धार्मिक जनसंख्या असंतुलन के कारण व प्रभाव
 - ऐतिहासिक परिणाम, वर्तमान स्थिति, प्रभाव
 - सामाजिक समरसता व जनांकिकीय असंतुलन
 - घुसपैठ एवं जनांकिकीय असंतुलन
- 10. वंशावली संरक्षण, संवर्द्धन एवं संवहन**
- वंशावली का महत्व, ऐतिहासिकता, प्रमाणिकता, स्वीकार्यता, न्यायालयों में साक्ष्य महत्व
 - वंशावली लेखक समाज, राष्ट्रीय एकता एवं समरसता में योगदान, मतांतरित जातियों की वंशावलियाँ
 - वंश-लेखक परम्परा
 - वंशावली बहियों का संरक्षण, वंशावली लेखन की प्रविधियाँ
- 11. मतांतरण (Conversion -सामान्य प्रचलित शब्द धर्मांतरण)**
- औचित्य, संवैधानिक पक्ष, न्यायालय निर्णय
 - भारतीय एवं वैश्विक पक्ष
 - मतांतरण का अधिकार व सीमा(मतांतरित होने व मतांतरित करने/कराने का अधिकार)
 - मतांतरण से सामाजिक समरसता पर प्रभाव
 - मतांतरण व विदेशी शक्तियाँ, मतांतरण के राजनैतिक अर्थ
- मतांतरण व मीडिया/राजनैतिक दल
 - मतांतरण के सन्दर्भ में राज्य की भूमिका व दायित्व
 - मतांतरित को आरक्षण व अन्य सुविधाओं का औचित्य
 - मतांतरित जाति/समुदाय एवं पूर्व जाति/समुदाय के मध्य समन्वय के कारक
 - मतांतरण व व्यक्तिगत विधि
 - मतांतरण के बारे में विभिन्न धार्मिक समूहों की अवधारणा
- 12. परावर्तन (Reconversion)**
- संवैधानिक स्थिति एवं न्यायिक निर्णय
 - आरक्षण व अन्य सुविधाओं की उपलब्धता
 - धर्मशास्त्रीय आधार
 - ऐतिहासिक पक्ष
- 13. प्रकृतिपूजक समाज**
- विश्व के विभिन्न प्रकृति पूजक समाज, उनकी ऐतिहासिकता, जनसंख्यात्मक पक्ष, वर्तमान स्थिति, रीति रिवाज, त्यौहार, भारत से संबंध आदि
 - भारतीय संस्कृति का विश्व प्रसार
- 14. जनजातीय समाज (Tribes)**
- विभिन्न जनजातियों के रीति रिवाज, धार्मिक मान्यता, लोक विश्वास, लोकाचार, लोक देवता, मतांतरण (Conversion) का प्रभाव, आरक्षण स्थिति, संवैधानिक प्रावधान एवं न्यायिक निर्णय
- 15. देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ**
- आतंकवाद, अलगाववाद, प्रादेशिकता, नक्सलवाद, घुसपैठ, सांस्कृतिक आक्रमण, आर्थिक साम्राज्यवाद, जातिवाद, अस्पृश्यता, जनसंख्या असंतुलन, मतांतरण आदि
 - समाधान के प्रयास
- 16. भारतीय सांस्कृतिक सामंजस्य के उभरते प्रतिमान**
- 17. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सातत्य**
- 18. सर्वसमन्वयात्मक भारतीय प्रज्ञा (आत्मसातीकरण, भारतीयकरण)**
- 19. विश्व के विभिन्न मत, पंथ, मजहब, धर्म**
- 20. कुटुम्ब प्रबंधन**
- 21. घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु तथा विमुक्त जाति-जनजाति**



ISSN 2348-2796

Sanskritik Pravah

(A multi disciplinary refereed research journal dedicated to socio-cultural harmony)

B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

e-mail : editor.sprj@gmail.com website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor) 094600-70031(Editor)

Membership Form

1. For Institutions & Individuals :

Name:

Office Address :

Email :

Contact No. : Mobile :

2. For Individuals Only :

Academic Qualification : Post Held

Postal Address :

3. Mode of Payment (Please Tick ✓)

A. Cheque / D.D. No. Date :

(Payble to "Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvay Sansthan")

B. Deposited in SBI A/c. No : 38940233966 (Branch : Indira Bazar, Jaipur)

C. Cash/ UPI by Paytm, Bhim, Google Pay Etc.

A/C Name & No . (above) IFSC : SBIN0031403

D. Pay by Paytm, Bhim etc direct to Mobile : 9414312288

(After Payment, please inform Chief Editor or Editor)

Date :

Signature

Subscription Rates (Please Tick ✓)

Individuals		Institutions	
5 years	Life Time (15 years)	5 Years	Life Time (15 years)
(Rajasthan) ₹ 1000	₹ 2700	₹ 2200	₹ 6000
(Out of Rajasthan) ₹ 1100	₹ 3000	₹ 2200	₹ 6000

For Office Purpose :

Receipt No. Date

Cheque/ D.D./ Bank Deposit/ Cash/ Paytm/ Google Pay (₹.....)

Signature

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.) (सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र)

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही देश के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, वेश-भूषा, खानपान, रीति-रिवाज, त्यौहार आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी सांस्कृतिक जीवन दर्शन की अन्तर्धारा एक ही बनी रही। सभी उपासना पद्धतियाँ या मजहब न केवल एक दूसरे के प्रति सहिष्णु रहे बल्कि सहअस्तित्व की भावना रखते हुए एक दूसरे का सम्मान भी करते रहे। भारतीय संस्कृति की इस धारा को अक्षुण्ण बनाये रखना आज की आधारभूत आवश्यकता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

संस्थान द्वारा सामाजिक समरसता व अन्य संबंधित विषयों पर सेमिनार, कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जाती हैं। अनेक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही यह शोध पत्रिका 'सांस्कृतिक प्रवाह' भी इसी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा रही है।